मैं आपकी संदर्भ पत्रिका की नियमित पाठक हूं। मुझे इससे काफी नई-नई जानकारी मिलती है। लेकिन मुझे यह पत्रिका नियमित नहीं मिल पाती है और मेरे द्वारा भेजे पत्र का जवाब भी नहीं दिया जाता है।

मैं यह जानना चाहती हूं कि किसी दुर्घटना में इंसान का हाथ कट जाने से उसकी जान नहीं जाती, परंतु हाथ की नस कट जाने पर उसकी मृत्यु हो जाती है, ऐसा क्यों होता है?

सुनंदा नागले
इटारसी, जिला होशंगाबाद
मध्यप्रदेश

पिछले दिनों मुझे संदर्भ का अंक 26 (नवंबर 98 - अप्रैल 99) प्राप्त हुआ। इसमें प्रस्तुत सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं। भूविज्ञान विषय से जुड़े होने के कारण मेरा ध्यान सबसे पहले 'प्रीकैम्ब्रियन जीवाश्म' पर गया।

भारत तथा अन्य देशों में प्रीकैम्ब्रियन जीवाश्मों पर बहुत ही सीमित अध्ययन हुआ है। इस कारण लेखक का यह लेख एक अभिनव तथा सराहनीय प्रयास है। लेखक ने कैम्ब्रियन चट्टानों का आधार 60 करोड़ वर्ष माना है जो आमतौर पर मान्य है। किन्तु वर्तमान शोध के अनुसार कैम्ब्रियन कल्प 49.5 से 54.5 करोड़ वर्ष पूर्व था (ऐपिसोड, अंक 19, 1996)। इसलिए प्रीकैम्ब्रियन युग आज से 54.5 करोड़ वर्ष पूर्व का काल था।

पृथ्वी पर प्रथम जीवाश्म साइनोबैक्टीरिया के हैं, जो 3.5 अरब पुरानी प्रीकैम्ब्रियन चट्टानों में पाए गए। इसी तरह मंगल ग्रह से अलग हुए उल्का पिंड ए. एल. एच. 84001 में पाए गए सूक्ष्म बैक्टीरिया के जीवाश्म लगभग 3.6 अरब वर्ष पूर्व के हैं।

डॉ. डी. पी. दुबे और डॉ. पी. के. कटल ने हाल में किए अपने शोधकार्य के बाद विन्ध्य चट्टानों के संबंध में कैम्ब्रियन तथा प्रीकैम्ब्रियन की सही तथा मान्य सीमा के निर्धारण पर ज़ोर दिया है।

प्रीकैम्ब्रियन की निचली आयु का निर्धारण जो भी हो लेकिन लेखक ने 55-60 करोड़ वर्ष से लेकर 350 करोड़ वर्ष के बीच में जीवाश्म रिकॉर्ड के खालीपन को लेकर शोध का एक नया विषय सामने प्रस्तुत किया है जिसका महत्व आने वाले समय में प्रमाणित होगा। लेखक तथा संदर्भ को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

डॉ. विजय खन्ना
प्रोफेसर, भूविज्ञान
जबलपुर, मध्यप्रदेश

मैंने और मेरी अनेक सहेलियों ने संदर्भ का 27 वां अंक पढ़ा। 'एक वैज्ञानिक को तराशना' में बताया गया है कि अगर आप वैज्ञानिक बनना चाहते हो तो बचपन की नींव को सुदृढ़ करना चाहिए। ब्लैक होल के बारे में पढ़कर हमारे ज्ञान में वृद्धि हुई। इसी तरह खग्रास सूर्यग्रहण के बारे में भी पढ़ा। कई लोग इसे दैवी प्रकोप

समझते हैं, उन्हें यह लेख पढ़कर सुनाया जिससे वे पुरानी मान्यताओं को बदल सकें।

संदर्भ को मैंने और मेरी सहेलियों ने पहली बार पढ़ा। इस अंक को पढ़कर हमारे मन में वैज्ञानिक बनने का उत्साह जागृत हुआ तथा इस प्रकार की नई जानकारियां प्राप्त करने की उत्सुकता उत्पन्न हुई।

चंदा सारन (कक्षा नवमीं)
सरस्वती विद्या मंदिर,
ज़िला हरदा, मध्यप्रदेश

मैंने एक वर्ष पहले से अपने ऑफिस में आने वाली संदर्भ पत्रिका पढ़ना शुरू किया। पत्रिका में जिस सरल तरीके से विज्ञान समझाया जाता है वह बहुत अच्छा और रोचक है। कृपया आप आइंस्टीन के 'जनरल रिलेटीविटी' पर भी कुछ प्रकाशित कीजिए। इससे काफी पाठक लाभांवित होंगे।

शैलेष नागर
मनुस्यारी, पिथौरागढ़
उत्तर प्रदेश

संदर्भ का सूर्यग्रहण की जानकारियों से भरा अंक ठीक सूर्यग्रहण से पहले पाकर सुखद आश्चर्य हुआ। अंक सूर्यग्रहण से पहले मिला इसलिए छात्रों को जानकारी देने का मौका भी मिल सका।

इस अंक में ब्लैक होल संबंधी लेख पढ़कर अच्छा लगा, वैसे भी ब्लैक होल कक्षा नवमीं में विज्ञान के पाठ्यक्रम में है। यदि आप इस लेख में तारे का जन्म, विकास, लाल दानव चरण को भी शामिल करते तो बेहतर होता। मैंने संदर्भ का यह अंक हाई स्कूल के कुछ छात्रों को पढ़ने के लिए दिया। उन्हें ब्लैक होल के अलावा 'पौधों में भोजन' पसंद आया। वास्तव में सहज और सरल हैं ये दोनों लेख।

'स्कूली विज्ञान पर बच्चों का नज़रिया' में लगभग सभी स्कूलों का चित्रण है।

कविता शर्मा (शिक्षिका)
सरस्वती विद्या मंदिर,
ज़िला हरदा, मध्यप्रदेश

'कुछ भूगोल कुछ इतिहास' (अंक-26) लेख में 'माल' शब्द जिसे कालीदास ने प्रयोग किया है, उससे लेखक को काफी असुविधा हो रही थी। दरअसल यह शब्द मालवी बोली का है। इसका अर्थ – जंगल, खेत तथा ढोर आदि को लेकर होता है। यह शब्द पंजाबी में भी है। मालवी में राजस्थानी, गुजराती, मराठी के शब्द बहुतायत में हैं और संस्कृत इनकी मां है। इसलिए इसका उत्स उसी में खोजा जाना चाहिए।

रजनीकांत शर्मा
कमीशनर कॉलोनी, होशंगाबाद
मध्यप्रदेश

शैक्षिक संदर्भ का 26 वां अंक मिला। संपादकीय पढ़कर मालूम हुआ कि पत्रिका के अनुरूप सामग्री न मिल पाने के कारण कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।

ऐसा नहीं है कि हमारे देश में वैज्ञानिकों की कमी है या विज्ञान में रुचि रखने वाले लोगों की कमी है। यह पाठकों की कमी है कि हम ऐसे लोगों तक इस पत्रिका को पहुंचा नहीं पा रहे हैं। वैसे इस बार का मुखपृष्ठ आकर्षक बन पड़ा है।

राजकुमार गुप्ता
नाशिक जेल, नाशिक
महाराष्ट्र

पिछले कुछ समय से मुझे संदर्भ के प्रत्येक अंक की दो प्रतियां मिल रही हैं और अंक 24-25 तो मिला ही नहीं।

मुझे संदर्भ के 26 वें अंक में 'जब हवा न बहे तो' और 'क्यूं है रात अंधेरी' लेख बहुत अच्छे लगे। इन्हें पढ़कर बहुत सारी नई जानकारी मिली।

27 वें अंक में 'खग्रास सूर्य ग्रहण' लेख से मुझे सूर्य ग्रहण की जानकारी मिली जिसे मैंने अपनी सहेलियों को भी पढ़वाया। एक वैज्ञानिक की जीवनी के बारे में पढ़कर संदर्भ के प्रति मोह और भी बढ़ गया है।

रूबी चंद्रवंशी
82, गढ़ीपुरा
जिला हरदा, मध्यप्रदेश

अंक 27 मिला। 'एक वैज्ञानिक को तराशना' अच्छा लगा। सही मायने में बच्चों पर परिवेश का बड़ा प्रभाव पड़ता है। अगर बचपन में ही उन्हें कूप मंडूप बना दिया जाए तो फिर बड़े होने पर उनमें बदलाव की उम्मीद करना बेमानी है।

सूर्य ग्रहण के बारे में इस तरह की बात सामने आई कि ग्रहण के दौरान पानी भरी परात में यदि थोड़ी दूरी पर दो मूसल खड़े कर दिए जाएं तो ग्रहण लगते ही वे आपस में टकराने लगते हैं; और ग्रहण छूटते ही फिर सीधे खड़े हो जाते हैं।

होस्टल के 50-60 लड़कों और चार-पांच प्रोफेसरों के बीच यह प्रयोग ग्रहण के दौरान किया गया। सभी का दृढ़ विश्वास था ऐसा ही होगा। परन्तु प्रयोग सफल होता न देखकर सभी को बड़ी ठेस लगी। विद्यार्थियों ने कहा कि अब हम ऐसी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करेंगे जब तक हम खुद करके न देख लें।

उस दिन अच्छा लगा और फाइनमेन वाला लेख बार-बार याद आता रहा।

किशोर पंवार
शासकीय महाविद्यालय, सेंधवा,
मध्यप्रदेश